International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

# हिन्दी समाचार पत्रों की समाज में भूमिका

**CANDIDATE NAME = ANUJ KUMAR SHARMA**
DESIGNATION= RESEARCH SCHOLAR SUNRISE UNIVERSITY ALWAR
**GUIDE NAME= DR. NARESH KUMAR**
DESIGNATION= ASSOCIATE PROFESSOR
SUNRISE UNIVERSITY ALWAR RAJASTHAN

**सारांश**

प्रत्येक समाचार-पत्र में एक ऐसा पृष्ठ होता है, जिस पर कोई समाचार प्रकाशित नहीं किया जाता बल्कि विचार, टिप्पणी और लेख एवं फीचर प्रकाशित किये जाते हैं जो सम-सामयिक होते हैं और कुछ खास मुद्दों पर आधारित होते हैं। यही पृष्ठ सम्पादकीय पृष्ठ कहलाता है। किसी भी समाचारपत्र में संपादकीय पृष्ठ हमेशा बायीं तरफ ही प्रकाशित किया जाता है और वह एक निश्चित पृष्ठ होता है। प्रत्येक समाचार-पत्र की अपनी एक नीति होती है और सम्पादकीय पृष्ठ उसी नीति का झरोखा होता है। संपादकीय पृष्ठ ही पत्र के सिद्धान्तों, आदर्शों की पहचान बताता है। संपादकीय के महत्त्व का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि रेडियो और टेलीविजन जैसे माध्यम उल्लेख करते हैं कि इस विषय पर किस पत्र के संपादकीय में क्या विचार व्यक्त किये गये हैं। वस्तुतः संपादकीय पृष्ठ की वह आधार है, जिसने 'प्रेस' को प्रजातन्त्र के चौथे स्तम्भ की मान्यता दिलाई है। इसका मुख्य कारण यह है कि जहां समाचारपत्र समाचारों से अवगत कराता है। वहां संपादकीय पृष्ठ विभिन्न समाचारों, घटनाओं, गतिविधियों और मुद्दों पर विचार से अवगत कराता है। जिन देशों में लोकतंत्र नहीं है, उनमें भी संपादकीय पृष्ठ का महत्व इतना ही है, क्योंकि सत्ता के दृष्टिकोण को जनता तक पहुँचाने का कार्य संपादकीय पृष्ठ से होता है। प्रस्तुत शोध प्रबंध अंतर्विषयक शोध प्रणाली पर आधारित है। इसके लेखन कार्य में सामग्री संकलन हेतु अंतर्वस्तु विश्लेषण प्रविधि को अपनाया गया है जिसमें यह माना गया है कि समाचारपत्र में प्रकाशित समाचार और अन्य सामग्रियों का सामाजिक सरोकार भी होता है। इस उपकल्पना को लेने के बाद अंतर्वस्तु की समग्र परिभाषा को स्पष्ट किया गया जिसमें हिन्दी के प्रमुख समाचारपत्र आते हैं।

**मुख्यशब्द:-** हिन्दी समाचार पत्र, समाज में भूमिका, संपादकीय पृष्ठ, सामाजिक सरोकार

**प्रस्तावना**

संचार मानव अस्तित्व का सार है. संचार तब होता है जब कोई व्यक्ति भाषा की सहायता से किसी विचार को दूसरे व्यक्ति के साथ साझा करने का निर्णय लेता है। जब दूसरा व्यक्ति समझता है और प्रतिक्रिया देता है तो संचार का कार्य पूरा हो जाता है। संचार मानवीय संबंधों का निर्माण करता है जिसमें ऐसे लोग शामिल होते हैं जो सामान्य अनुभव या घटनाएं साझा करते हैं। इस प्रक्रिया को समझने के लिए सामान्य भाषा की आवश्यकता होती है जो दो लोगों के बीच

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
IJARST
ISSN: 2457-0362

परिचितता के प्रतीक के रूप में कार्य करती है। इसके अलावा यहां मस्तिष्क की गतिविधि महत्वपूर्ण है जो संदेश के प्रसारण में सक्रिय रूप से शामिल होती है। संचार की प्रक्रिया में दो लोग शामिल होते हैं प्रेषक (वह व्यक्ति जो संदेश भेजता है) और प्राप्तकर्ता (वह व्यक्ति जिसे संदेश भेजा जाता है)। इसलिए संचार की प्रक्रिया तब पूरी होती है जब प्राप्तकर्ता प्रेषक द्वारा प्रेषित संदेश को समझने का एक स्तर प्राप्त कर लेता है। इस प्राप्त करने की प्रक्रिया, जिसे डिकोडिंग भी कहा जाता है, का वर्णन किया गया है

जोसेफ आर. डोमिनिक इस प्रकार, "इसमें ऐसी गतिविधियाँ शामिल हैं जो भौतिक संदेशों को ऐसे रूप में अनुवादित या व्याख्या करती हैं जिसका प्राप्तकर्ता के लिए अंतिम अर्थ होता है"।

संचार शब्द में कई गतिविधियाँ शामिल हैं जो जीवन के सार को संचालित करती हैं। मानव अस्तित्व की महत्वपूर्ण आवश्यकता अर्थात खाना, सोना, प्यार करना और सबसे बढ़कर अस्तित्व संचार के बिना अधूरा है। इस संचार प्रक्रिया का वर्णन किया गया है

केवल. जे. कुमार इस प्रकार, "संचार वह नाम है जिसे हम मनुष्यों के संपर्क में रहने के अनगिनत तरीकों को देते हैं - न कि केवल शब्द और संगीत, चित्र और प्रिंट, सिर हिलाना और इशारा करना, मुद्राएं और पंख, हर वह हरकत जो किसी का ध्यान खींचती है और हर ध्वनि जो दूसरे के कान पर गूंजती है"।

कोई भी मनुष्य शून्य में नहीं रह सकता। किसी को बातचीत करने की ज़रूरत है और संचार बातचीत के रास्ते खोलता है। यह अंतःक्रिया स्वयं के साथ (इंट्रापर्सनल कम्युनिकेशन) हो सकती है जिसमें एक व्यक्ति अपने आंतरिक स्वभाव, ईश्वर और आत्माओं के साथ अंतःक्रिया करता है। इसका अभ्यास अधिकतर धार्मिक संस्थानों में किया जाता है, जहां प्रार्थना के माध्यम से व्यक्ति स्वयं से संवाद करता है। यह बेचैन मन को शाश्वत शांति और मानव अस्तित्व को सांत्वना देता है। यह किसी की हार्दिक जरूरतों और आकांक्षाओं को सुनने का अवसर देता है। संचार का क्षेत्र बहुत व्यापक है और इसमें मानव व्यवहार की अनगिनत गतिविधियाँ शामिल हैं।

संचार की शुरुआत जीवन के अस्तित्व से होती है। यहां तक कि एक नवजात बच्चा भी रोकर अपनी जरूरतों को बताना शुरू कर देता है और जैसे-जैसे वह बड़ा होता है, गरारे की आवाजें संचार स्तर में तब तक जुड़ती जाती हैं जब तक कि बच्चा विचारों और अभिव्यक्तियों को व्यक्त करने के लिए भाषा विकसित नहीं कर लेता। संचार की आवश्यकता न केवल व्यक्तिगत स्तर पर है बल्कि यह एक सामाजिक आवश्यकता भी है। कोई भी व्यक्ति अलगाव में नहीं रह सकता. जीवन के सामान्य अनुभवों को साझा करने और लोगों के साथ संबंध विकसित करने के लिए समाज के साथ संचार आवश्यक है। संचार के बिना व्यक्ति गंभीर बीमारियों और कुछ व्यवहार संबंधी समस्याओं जैसे हीन भावना, चिंता, निष्क्रियता, दोषपूर्ण निर्णय लेने और बहुत कुछ विकसित कर सकता है। न केवल मनुष्य बल्कि जानवर

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

भी संचार का अभ्यास करते हैं और इसके बिना कुछ नहीं कर सकते। जानवरों की आवाज़ें जैसे बाघ की गुर्राहट, मधुमक्खियों की गुनगुनाहट आदि एक दूसरे के साथ संचार के रूपों का संकेत देती हैं। संचार की आवश्यकता बहुत बुनियादी है और यह निरंतर जारी रहने वाली प्रक्रिया है। जानवरों का संवेदी संचार उन्हें एक-दूसरे के साथ संवाद करने में मदद करता है और एक निश्चित दिशा और दूरी का संकेत देता है जहां भोजन पाया जा सकता है। इसके अलावा, ये ध्वनियाँ अन्य जानवरों से खुद को बचाने और अपने निवास स्थान में एक परिचितता विकसित करने के लिए संकेतों के रूप में कार्य करती हैं। एक जानवर से सिग्नल खोने से दूसरे जानवर की जान जा सकती है। जानवरों के बीच सूचना का दोतरफा प्रवाह जागरूकता प्रदान करता है और उन्हें आजीविका के लिए आवश्यक प्रेम के रिश्ते विकसित करने में मदद करता है। प्रारंभिक मानव के समय के बारे में बात करते हुए, जिसने जंगलों में रहते हुए संचार के साधन के रूप में संकेत भाषा का उपयोग किया और बाद में जीवन की सभ्यता के साथ भाषा विकसित की। भाषा का आगमन संचार की प्रबल इच्छा का परिणाम है। संचार के कई रूप होते हैं।

**स्वतंत्रता से पहले भारतीय प्रेस की भूमिका**

विलियम बोल्ट्स ने 1776 में कलकत्ता में समाचार पत्र शुरू करने का पहला प्रयास किया। वह ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्मचारी थे और उन्होंने एक समाचार पत्र शुरू करने के लिए नौकरी से इस्तीफा दे दिया था लेकिन दुर्भाग्य से सरकार को उनका यह कदम पसंद नहीं आया और उन्हें भारत छोड़कर यूरोप वापस जाने के लिए कहा गया। कुछ वर्षों के बाद, 1780 में जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने बंगाल गजट या कलकत्ता जनरल एडवरटाइज़र नाम से एक बंगाली साप्ताहिक समाचार पत्र शुरू किया। हिक्की गजट पर नटराजन का विचार एक "साप्ताहिक राजनीतिक और वाणिज्यिक पत्र था, जो सभी पार्टियों के लिए खुला था लेकिन किसी से प्रभावित नहीं था"। हिक्की के पेपर में दो शीट थीं और अधिकांश जगह विज्ञापनों ने घेर रखी थी। सरकार की आलोचना के कारण हिक्की के गजट को शासक का क्रोध झेलना पड़ा। हिक्की कंपनी के कर्मचारियों के निजी जीवन को उजागर करने में माहिर था जिसके परिणामस्वरूप उसके लिए परेशानी खड़ी हो गई। हिक्की को मिशनरियों, अधिकारियों और गवर्नर जनरल वॉरेन हेस्टिंग्स पर घातक हमले के आरोप में जेल में डाल दिया गया था। हिक्की ने जेल में रहते हुए भी अपने अखबार का संपादन जारी रखा। बाद में, हिक्की और उसके प्रतिद्वंद्वी अखबारों को सभी डाक सुविधाएं देने से इनकार कर दिया गया। इंडियन गजट, बंगाल जर्नल, ओरिएंटल पत्रिका, मद्रास कूरियर ने केंद्र में जगह बनाई। हिक्की ने लिखना जारी रखा लेकिन धीरे-धीरे वह गरीबी और दुख में डूब गया जिसने उसे तोड़ दिया। हिक्की के बंगाल गजट के बाद आने वाले अखबार केवल सरकार का पक्ष लेकर फले-फूले और बाद में सरकारी नियमों के कारण बंद कर दिए गए। प्रेस की स्वतंत्रता में हिक्की के योगदान पर अजय दाश ने कहा,

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
IJARST
ISSN: 2457-0362

"हिक्की के समय से ही, प्रशासन ने भारतीय प्रेस की गंभीर रूप से सत्ता-विरोधी होने की क्षमता को पहचाना है।"

**हिन्दी पत्रकारिता**

हिंदी अखबार शुरू करने का पहला प्रयास जुगल किशोर शुक्ला द्वारा शुरू किया गया था, जिन्होंने 1826 में ओडंट मार्तंड शुरू किया था। यह एक साप्ताहिक अखबार था और कलकत्ता में छपता था। मुन्नू ठाकुर इसके मुद्रक थे. इसे स्थापित करने में इसके संपादक द्वारा संजोए गए आदर्शों को स्पष्ट किया गया। उन्हें व्यापक क्षेत्र में अखबार प्रसारित करने में समस्याओं का सामना करना पड़ा और उन्हें डाक रियायतें नहीं दी गईं। अखबार के 79 अंक थे. अगला प्रयास राजा राममोहन राय द्वारा किया गया, जिन्होंने बंगदूत को प्रायोजित किया, जो 1829 में हिंदी और तीन अन्य भाषाओं में प्रकाशित हुआ था। यह मूल रूप से बंगाल हेराल्ड के एक भाग के रूप में प्रकाशित हुआ था और एक महीने बाद नाम बदल दिया गया था। जी.एस. बरघुआ राजा राममोहन राय के योगदान पर अपने विचार इस प्रकार रखते हैं, "राममोहन राय अंधविश्वास और कट्टरता से ग्रस्त लोगों में लोकतांत्रिक भावना पैदा करने में अग्रणी थे।"

वर्तमान शताब्दी के तीसरे और चौथे दशक के बीच के कुछ प्रसिद्ध हिंदी समाचार पत्र हैं: सैनिक (आगरा 1928), शक्ति (लाहौर 1930), प्रताप (कानपुर), नवयुग (दिल्ली), नवराष्ट्र (बॉम्बे)। लोकमत (नागपुर 1931), लोकमान्य (कलकत्ता 1930), वर्तमान (कानपुर 1920), विश्वामित्र (कलकत्ता, 1917 बॉम्बे, 1941, दिल्ली 1942), नवभारत (नागपुर 1934), अधिकार (लखनऊ 1938), उजाला (आगरा 1940), आर्यावर्त ( पटना 1942), संसार (काशी 1943), जय हिंद (1946 जुबुलपुर), सन्मार्ग (काशी और कलकत्ता 1946), अर्जुन (1923), वीर अर्जुन (1934 दिल्ली), हिंदुस्तान (1934 दिल्ली), कांग्रेस (दिल्ली 1940), हिंदी मिलाप (लाहौर 1930)।

अन्य प्रसिद्ध हिंदी समाचार पत्र हैं दैनिक जागरण (1953), पंजाब केसरी (1965), हिंदुस्तान (1936), अमर उजाला, जनसत्ता (1981), राष्ट्रीय सहारा, नई दुनिया (1947), नवभारत (1934), नवभारत टाइम्स (1950), राजस्थान पत्रिका (1956), दैनिक भास्कर (1958), दैनिक ट्रिब्यून (1978), स्वतंत्र भारत (1947), जनमोर्चा, वीर अर्जुन, कुबेर टाइम्स, आज (1920), हमारा महानगर।

उसके बाद के वर्षों में, हिंदी भाषा प्रेस ने बढ़ते प्रसार और आधुनिक समाचार पत्र उत्पादन तकनीकों के साथ मजबूत प्रगति की है। मदन मोहन मालवीय जैसे नेताओं के नेतृत्व में, हिंदी भाषा प्रेस को शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे महान लोगों के होने का दुर्लभ सम्मान प्राप्त है, जो हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रतिपादक थे। कई हिंदी भाषा के समाचार पत्र हैं जो समाचार और विचारों की प्रस्तुति में उच्चतम मानकों को बनाए रखते हैं और कई आधुनिक रुझानों को ध्यान में रखते हुए व्यापक रुचि पैदा कर रहे हैं। हिंदी प्रेस अब एक ताकतवर ताकत बन गई है और निश्चित रूप से कुछ बेहतरीन पत्रकार हैं जिनकी भारत की स्थिति

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
IJARST
ISSN: 2457-0362

के बारे में समझ अपने अंग्रेजी समकक्षों की तुलना में कहीं बेहतर है।

**समाज के सन्दर्भ में समाचार पत्रों की विकास यात्रा**

किसी समाज के विकास के लिए समाज में रहने वाले व्यक्तियों के आपसी सम्बन्ध, आपसी समझ और मानसिकता में एकता होना सबसे जरूरी है। ऐसा तभी संभव है जब उनके मध्य संचार प्रक्रिया सुचारू हो ताकि वे एक-दूसरे की बातों को जान या समझ सकें। बातों को जानने और समझने की यह मानव उत्सुकता विविध रूपों में प्रकट होती रही है। उसका एक रूप वह है जो समाचारपत्रो के जन्म के कारण हुआ है। किस्सागोई, शिलालेख और स्तम्भ लेखों के पश्चात् क्रमशः कागज और छापने की मशीन आयी तथा हस्तलिखित समाचार पत्र को छापा जाने लगा। सरकार की ओर से नगर के तथा दूसरे स्थानों के संकलित समाचारों को लिखकर या छापकर सार्वजनिक स्थानो में लगा दिया था जिसे 'गजेट' कहा जाता। समाचार प्रकाशित करने की यह 'गजेट' स्वरूप ही मूलतः आधुनिक पत्रो की जनक थी। 'गजेट' शब्द की उत्पत्ति का भी छोटा सा इतिहास है। यह एक इटालियन शब्द है जो उस समय एक छोटे सिक्के के लिए प्रयुक्त होता था। पत्रो की एक प्रति एक 'गजेट' में बेची जाती थी, अतः पत्र 'गजेट' के नाम से विख्यात होने लगे।

1622 ईसवी के अगस्त (श्री ए0जे0 कामन्स के मत से मई) में लन्दन में पहला साप्ताहिक समाचार पत्र्ा पहल्ो पहल प्रकाशित हुआ और तभी से विश्व परिप्रेक्ष्य में 'प्रेस' का प्रवेश हुआ। भारतीय सन्दर्भ में यह स्थिति 1789 ई0 की थी जब जेम्स आगस्टस हिकी ने कलकत्ते में 'बंगाल गजट/हिकी गजट' पत्र्ा का प्रकाशन किया था।

यूरोप में सर्वप्रथम मुद्रण कला का आविष्कार पन्द्रहवीं शताब्दी के आरंभिक युग में जर्मनी में हुआ था। इस आविष्कार ने समाचार पत्रो के प्रकाशन को अति सुलभ कर दिया। धीरे-धीरे पूरे विश्व में प्रेस ने अपनी सत्ता जमा ली। सत्रहवीं, अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दियों में प्रेस के विकसित होते स्वरूप और समाचार पत्रो के विकास की प्रक्रिया काफी विस्तृत और रोचक रहीं। विभिन्न देशों के विभिन्न समय में स्थापना और उसके विकास का वृहत इतिहास इस संक्षिप्त शोध ग्रंथ में उल्लेख करना संभव नहीं है। लेकिन इतना कहा जा सकता है कि मुद्रण के इस नए रूप ने मनुष्य के जीवन और समाज में सहसा तीव्र गति प्रदान कर दी। अब एक समाज की विशेषताएँ दूसरे समाज को प्रभावित करने लगीं, पूर्व एशियाई क्षेत्रो में पाश्चात्यीकृत संस्कृति और पाश्चात्य यूरोपीय देशों में भारतीय धर्म-आध्यात्म की चर्चा आम बात हो गई। इस वैचारिक और व्यावहारिक आदान-प्रदान में सामाजिक विकास की संकल्पना को आगे बढ़ाते हुए एक आधुनिक समाज का निर्माण हुआ जिसमें परम्परागत और मुक्त दोनों समाज की विशेषताएँ विद्यमान थीं। यह समाज वृहद् समाज या वैश्विक समाज भी कहलाया।

समाचार पत्रो का अब तक का इतिहास देखा जाय तो पता चलता है कि मुद्रण कला के

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

उद्भव के साथ यह मानव समाज के विकास का पर्याय बनकर उभरा है। समाज और समाचार पत्र्ा का पूरक के रूप में कार्य करना समाज निर्माण की आवश्यक शर्त है। यहाँ पूरक से तात्पर्य यह है कि यदि समाज में किसी विशिष्ट प्रकार का उद्भव, विकास और अवनति की प्रक्रिया चल रही है तो समाचार पत्र्ा की स्थिति भी कमोबेश वही होगा। क्योंकि ये पत्र समाज की क्रिया-प्रतिक्रिया को ही अपने समाचारों में समावेशित करते हैं और समाज के द्वारा ही संचालित किये जाते हैं। अपने समस्त लेखन, संचालन और प्रकाशन प्रक्रिया द्वारा ये समाज विकास में उत्प्रेरण का कार्य भी करते हैं। ये समाज के नकारात्मक-सकारात्मक दोनो छवियों को व्यक्ति के समक्ष रखता है और उसमें परिवर्तन की आवश्यकताओं को स्पष्ट करता है। समाज निर्माण, समीक्षा और मार्गदर्शन की बहुआयामी भूमिका पूर्ण करने के लिए समाचार-पत्रो का प्रकाशन दिन-ब-दिन उन्नत और समुचित ढंग से होने लगा है और आज हम आधुनिक समाचार पत्रो को उस रूप में पाते है जिस रूप में वे हमारे सामने हैं।

**निष्कर्ष**

समाचार पत्र आज के मनुष्य का ऐसा साथी और मित्र हो गया है जिससे वह जीवन के प्रत्येक पहलू में सहायता की अपेक्षा करता है। राजनीतिक विषयो में तो समाचार पत्र बहुत पहले से समाज का पथ-प्रदर्शक और गुरु रहा है, परन्तु आज उसका क्षेत्र उससे कहीं अधिक विस्तृत हो गया है। ऊपर वर्णित राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक-सांस्कृतिक, शैक्षणिक क्षेत्रों में इसके महत्व को देखा जा सकता है। मनुष्य के जीवन से सम्बन्ध रखने वाली जितनी भी छोटी-बड़ी समस्याएँ हैं या हो सकती है उन सबसे सम्बन्धित सूचना प्रदान करना और उन पर मत प्रकट करना पत्र्ा की जिम्मेदारी बन गयी है। भोजन के विषय में, फैशन के विषय में, स्वास्थ्य और सौन्दर्य, विवाह और प्रेम, अभिनय और नृत्य, व्यायाम और खेल, व्यापार और व्यवसाय, दैनिक जीवन के संसाधन आदि कोई भी विषय क्यों न हो सबके सम्बन्ध की सूचना साधारण मनुष्य समाचार पत्र से पाने की अपेक्षा करता है। ऐसे में समाज और समाचार पत्र की एक-दूसरे पर निर्भरता का अंदाजा लगाया जा सकता है। समाज के प्रत्येक अंगों, शक्तियों और मुद्दों को जानना और उसके बारे में व्यक्ति को सूचित करने की जिम्मेदारी यकीनन काफी बड़ी है। विशेषकर उस स्थिति में जन समाज का एक बड़ा तबका पत्र में छपे हरेक शब्द और सूचनाओं पर पूर्ण विश्वास करता हो और उसी के अनुसार जीवन को अनुकूलित करता हो।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

बक्सी, संदीपन। (2021)। स्वतंत्रता-पूर्व भारत में हिंदी में विज्ञान पत्रकारिता: हिंदी पत्रिकाओं का एक अध्ययन। भारतीय आर्थिक एवं सामाजिक इतिहास समीक्षा। 59. 001946462110645.
10.1177/00194646211064586.

पांडे, सुमित कुमार. (2020)। काशी की हिंदी पत्रकारिता: इतिहास और वर्तमान। 10.13140/आरजी.2.2.17424.74241।

अर्जुन, स्वाति. (2018)। हिंदी डिजिटल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म: पत्रकारिता का स्थान टैब्लॉयडवाद द्वारा ले लिए जाने का एक विचित्र मामला। 10.13140/आरजी.2.2.28683.57124।

पॉल, सुबिन और पामर, रूथ। (2022)। भीतरी इलाकों से दृश्य: हिंदी समाचार रिपोर्टिंग में जाति, लिंग और प्रेस की स्वतंत्रता। एशियन जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन. 32. 1-18. 10.1080/01292986.2021.2016874.

कुमार, अमित और गौर, पूनम। (2020)। भारतीय प्रिंट मीडिया में डेटा विज़ुअलाइज़ेशन: अंग्रेजी और हिंदी समाचार पत्रों का तुलनात्मक अध्ययन। आरयूडीएन जर्नल ऑफ स्टडीज इन लिटरेचर एंड जर्नलिज्म। 25.554-566. 10.22363/2312-9220-2020-25-3-554-566।

गोखले, सागर। (2022)। भारत में टेलीविजन समाचार प्रस्तुति: 2008 से 2018 की अवधि के लिए राष्ट्रीय हिंदी और मराठी चैनलों में रुझानों का विश्लेषण।

मीना, प्रोफेसर. (2015)। भारत में प्रयोजनमूलक हिन्दी का पहलू।

डैश, नीलाद्रि. (2020)। हिंदी समाचार पत्रों की सुर्खियों की संरचना का विश्लेषण: एक प्रवचन परिप्रेक्ष्य।

नूपुर,. (2010)। राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्रों में कृषि पत्रकारिता की सामग्री विश्लेषण पर अध्ययन। फसलों पर शोध. 11. 775-780.

कार्लसन, मैट और पीटर्स, क्रिस। (2023)। यथार्थवादियों के लिए पत्रकारिता अध्ययन: पत्रकारिता अध्ययन जारी रखते हुए पत्रकारिता का विकेंद्रीकरण। पत्रकारिता अध्ययन. 24. 1-14. 10.1080/1461670x.2023.2190818।

हसन, अब्दुलसादेक और अंगावी, मोहम्मद। (2023)। डेटा पत्रकारिता और डिजिटल युग में इसके अनुप्रयोग। 10.1007/978-3-031-35828-9_16.

आहूजा, बी.एन. और छाबड़ा. एस.एस. पत्रकारिता के सिद्धांत और तकनीकें। बीकन बुक्स, नई दिल्ली।

कौल, आशा. प्रभावी व्यावसायिक संचार. प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया प्रा. लिमिटेड नई दिल्ली

बरगौआ, जी.एस. द प्रेस इन इंडिया: एन ओवरव्यू नेशनल बुक ट्रस्ट। नई दिल्ली।

बहरी, एच. (2002)। राजपाल पॉकेट हिंदी शब्दकोश। राजपाल एंड संस, नई दिल्ली।

भास्कर, बी.आर.पी. भाषा प्रेस को समझना. फ्रंटलाइन, 2 मार्च 2001।

भट्टाचार्जी. अरुण. द इंडियन प्रेस: प्रोफेशन टू इंडस्ट्री। विकास प्रकाशन. 1972 नई दिल्ली।

बालन, के.आर. और रायडू. सी.एस. प्रभावी संचार। बीकन पुस्तकें। नई दिल्ली।

चतुर्वेदी, एम. (1970)। एक व्यावहारिक हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोश। नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

चक्रवर्ती, सुहास. प्रेस और मीडिया- वैश्विक आयाम। कनिष्क प्रकाशक। नई दिल्ली।

चतुवेर्दी, प्रसाद जगदीश. हिंदी पत्रकारिता का इतिहास। प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।

चटर्जी, पी.सी. भारत में प्रसारण. ऋषि प्रकाशन। नई दिल्ली।

चतुवेर्दी, एम. एवं तिवारी। बी.एन. (सं.). (1996)। एक व्यावहारिक हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोश। नेशनल पब्लिशिंग हाउस। नई दिल्ली।

डैश अजय. प्रेस की स्वतंत्रता। डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस। नई दिल्ली।

डिफ्लूर, मेल्विन एल. और डेनिस। एवरेट ई. जनसंचार को समझना। बोस्टन: हॉटन मिफिन कंपनी। 1991.